RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक :5
सृष्टि संवत् 1960853117
1 मई, 2016
दयानन्दब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

POSTAGE PRE-PAI
MAIL BUSINESS CENTR
28 APR 2016

वर्ष–73, अंक : 5, 28–1 मई 2016 तदनुसार 19 वैसाख सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

यज्ञ–समाज को उन्नत करो

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नावमरित्रपरणीं कृणुध्वम्। इष्कृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राञ्चं यज्ञं प्र णयता सखायः॥
–ऋ० १०।१०१।२

शब्दार्थ–**मन्द्रा** = मधुर कर्म **कृणुध्वम्** = करो **धिय :** = बुद्धियों का **आ** = सब ओर **तनुध्वम्** = विस्तार करो **नावम्** = नौका को **अरित्रपरणीम्** = चप्पुओं से सुरक्षित **कृणुध्वम्** = करो। **आयुधा** = आयुध, हथियार **इष्कृणुध्वम्** = परिष्कृत करो, सजाओ **अरम्** = पूरी तैयारी **कृणुध्वम्** = करो और **यज्ञम्** = सङ्गठन यज्ञ को, **सखायः** = समान विचारवाले होकर **प्राञ्चम्** = प्रोन्नत **प्र+णयत** = करो।

व्याख्या–इस मन्त्र में सङ्गठन को उन्नत करने के कुछ साधन कहे गये हैं, जो मनन और आचरण करने योग्य हैं, जिन पर आचरण करने से समाज अवश्य उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है।

१. **'मन्द्रा कृणुध्वम्'** = मधुर कर्म करो। समाज–सङ्गठन का अर्थ है–अनेक मनुष्यों को जिनका ध्येय एक हो, एकत्र करना। कटुता से, कठोरता से विवश होकर, भले ही समय–यापन करने के लिए कोई किसी सङ्गठन में आ मिले, किन्तु समय मिलने पर अवश्य ही वह इसका विरोध करेगा, अतः समाज–सङ्गठन के लिए उत्सुक मनुष्यों को अवश्य मधुर कर्म करने चाहिएँ। यजुर्वेद में कहा गया है–**'अक्रन् कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा'** = कर्मशील लोग सुखदायिनी वाणी के साथ कर्म करते हैं, अर्थात् कर्म–विज्ञान के ज्ञानी अपने किसी भी कर्म में कटुता–कठोरता नहीं आने देते, वरन् सदा मधुरता का प्रयोग करते हैं। वाणी का माधुर्य अत्यन्त अकृत चमत्कार दिखाता है।

२. **'धिय आ तनुध्वम्'** = बुद्धियों का विस्तार करो। बुद्धि के बिना तो कोई कार्य हो ही नहीं सकता। बुद्धिहीन मनुष्य अनेक संकटों में फँसा रहता है। जितनी बुद्धि की न्यूनता उतनी अधिक पराधीनता, जितनी बुद्धि विशाल, उतनी परतन्त्रता न्यून। नीतिकार बुद्धि को बल बतलाते हैं–**'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्'** = जिसके पास बुद्धि है उसी के पास शक्ति है, बुद्धिहीन के पास शक्ति कहाँ ? अतः वेद में आदेश है–**'मनीषिणः प्र भरध्वं मनीषाम्'** [ऋ० १०।१११।१] बुद्धिमानो ! बुद्धि को खूब बढ़ाओ। अतएव आर्यों के जपमन्त्र–गायत्रीमन्त्र में आता है–**'धियो यो नः प्रचोदयात्'१** = भगवान् हमारी बुद्धियों को शुभ प्रेरणा दे।

३. **'नावमरित्रपरणीं** कृणुध्वम्' = नौका को चप्पुओं से सुरक्षित करो। नौका चलाने के लिए चप्पू चाहिएँ। चप्पुओं के बिना नौका चलाना भय को आमन्त्रण देना है। जैसे नौका के चलाने के लिए चप्पू आवश्यक हैं, ऐसे समाज को सामाजिक शत्रुओं से बचाने के लिए पारस्परिक सहयोग की नितान्त आवश्यकता है। समाजरूपी नौका के लिए समान विचार, समान उच्चार, समान आचार, समान लक्ष्य मुख्य चप्पू हैं, अतः इनका सदा संग्रह रखना चाहिए।

४. **'आयुधम् इष्कृणुध्वम्'** = हथियार सजाओ। कुण्ठित, जीर्ण हथियारों से नहीं लड़ा जा सकता, अतः साधन–सामग्री पूरी तरह परिष्कृत रखनी चाहिए।

५. **'अरं कृणुध्वम्'** = तैयारी करो। मनुष्य के पास ज्ञान, कर्म, क्रियाकुशलता और बुद्धिविशालता हो तो समाजरूपी नौका ठीक चल सकेगी, फिर सारे शस्त्रास्त्र प्राप्त करने सरल होंगे। तैयारी में किसी प्रकार की बाधा न होगी। वेद कहता है–इस तैयारी के साथ–

'प्राचं यज्ञं प्रणयता सखायः' = तुम सब एक विचार वाले होकर इस यज्ञ को = सङ्गठन को ऊँचा ले–जाओ।

समाजोन्नति के लिए विचारों की एकता की अत्यन्त आवश्यकता है, इसके बिना सङ्गठन हो नहीं सकता। इसीलिए ऋग्वेद [१०।१०१।१] में कहा है–

उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीळाः।

तुम जब जागो, एक मन और एक आचारवाले होकर, एक ठिकाना बनाकर तुम बहुत–से होकर एक ही आग जलाओ, अर्थात् तुम्हारा सङ्गठन एक हो॥ सङ्गठन की एकता बनाये रखने के लिए सावधान रहने, एक मन तथा एक विचार और एक उद्देश्य रखने की भारी आवश्यकता है॥

इन सङ्केतों के अनुसार किया गया समाजविधान कभी दुर्बल नहीं होता॥ **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

देव यज्ञ : उसके लाभ तथा उसका महत्त्व

-ले० स्वामी शिवानन्द योगतीर्थ वैदिक साधना आश्रम, शुक्रताल, जिला मुजफ्फरनगर

1. देवयज्ञ-यजु-देवपूजा-संगतिकरण दानेषु। यज् धातु देवपूजा, संगतिकरण और दान अर्थ में प्रयोग की जाती है। **देव पूजा**-जब अग्निहोत्र किया जाता है तो उससे देवताओं की पूजा होती है। देव दो प्रकार के हैं, जड़ देवता और चेतन देवता। **जड़ देवता**-अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र-तारे। **चेतन देवता**-माता, पिता, आचार्य-गुरु, अतिथि विद्वान्, संन्यासी, योगी, ज्ञानवृद्ध आदि। **संगतिकरण**-जब यज्ञ करते हैं तो श्रद्धा के साथ आसपास के मानव, बच्चे, माताएं, बहिनें आदि एकत्रित होकर यज्ञ करते हैं। एकत्रित होना ही संगतिकरण है। **दानेषु**-जब यज्ञ करते हैं तो अग्नि में घृत सामग्री मीठे भात आदि की आहुति दी जाती है। यह दान है तथा यज्ञ कराने वाले ब्रह्मा पुरोहित को दक्षिणा दी जाती है, यह दान है। देवयज्ञ= अग्निहोत्र करना हमारा मुख्य कर्त्तव्य है। पञ्च महायज्ञों में देव यज्ञ का दूसरा स्थान है।

2. देवयज्ञ की आवश्यकता-प्रत्येक प्राणी आँख, नाक, कान, मुख, स्वेद, मल और मूत्र के द्वारा गन्दगी छोड़ता है जिसके फलस्वरूप यह वायुमण्डल दूषित हो जाता है तथा रोगी के शरीर से रोग के कीटाणु निकलते हैं जो कि वायुमण्डल को दूषित बना देते हैं ; जिसके परिणाम स्वरूप पशु आदि प्राणी तथा मानव रोगी हो जाते हैं। अत: हर मानव का कर्त्तव्य है कि जितना वह अपने शरीर से दुर्गन्ध छोड़ता है उसके बदले वायुमण्डल को शुद्ध करने के लिए वह देवयज्ञ करे, अर्थात् वायुमण्डल को शुद्ध करने के लिए प्रतिदिन यज्ञ करने की आवश्यकता है। इसलिए वेदों में देव यज्ञ करने का विधान है।

3. देवयज्ञ न करने से हानियाँ-प्राचीनकाल में यज्ञों का बड़ा प्रचलन था। एक समय था कि गाँव व नगरों के, अधिकांश घरों में दोनों समय यज्ञ होता था। जब ऋषि भर्तृहरि जी महाराज राजपाट छोड़कर वन में तपस्या करने के लिए जा रहे थे, उस समय उन्हें चलते-चलते शाम हो गयी। तब गाँव के कुछ लोग उन्हें मिले। वे कहने लगे, महाराज आप हमारे घर चलिए, रात्रि विश्राम करके कल चले जाना। तब भर्तृहरि महाराज बोले, "मैं उस घर में निवास करता हूँ जिस घर में दोनों समय यज्ञ होता हो और यज्ञ के धुएं से घर की कड़ियां काली हो गयी हों।" तब वे सभी लोग कहने लगे कि "महाराज आप जिस घर में जायेंगे, उसी घर में दोनों समय यज्ञ होता हुआ आपको मिलेगा तथा यज्ञ के धुएं से सभी के घरों की कड़ियां काली हुई मिलेगी।" तब वे उनके आग्रह पर किसी के यहाँ जाकर रुके। वह एक ऐसा समय था कि दोनों समय लोग यज्ञ करते थे। इसके अतिरिक्त भी बड़े-बड़े सामूहिक यज्ञ करते थे। उन यज्ञों के परिणाम स्वरूप सभी अधिकांशत: नीरोग रहते थे। परन्तु आज यज्ञों के अभाव के कारण वायुमण्डल दूषित हो गया है।

1. जिसके फलस्वरूप आकाश में ओजोन गैस की परत में छेद हो गये हैं। इससे संसार के सभी देश चिन्तित हैं। सूर्य की किरणें सीधे आने से हानि होगी।

2. अनेक बीमारियाँ पशुओं में तथा मानव समाज में बढ़ती जा रही हैं।

3. मनुष्य की आयु औसतन कम हो चुकी है।

4. मन से तथा शरीर से आज का मानव स्वस्थ नहीं है।

5. धन वैभव के होते हुए भी आज का मानव मन से प्रफुल्लित नहीं है।

6. आज मानसिक शान्ति का अभाव है।

7. नई-नई बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

8. वातावरण में शान्ति के परमाणुओं की दिन प्रतिदिन कमी आती जा रही है। इसके स्थान पर अशान्ति, क्रोध आदि के परमाणु बढ़ते जा रहे हैं।

9. वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।

10. मानव समाज में प्रेमभाव, संगतिकरण दिन प्रतिदिन घटता जा रहा है।

11. धार्मिकता व धार्मिक कार्यों में रुचि और श्रद्धा निरन्तर घटती जा रही है।

यज्ञों के अभाव में इतनी सब हानियाँ हो रही हैं।

4. यज्ञ न करने से पाप लगता है-क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध पैदा होकर वायु और जल को दूषित करके रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दु:ख प्राप्त कराता है उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिए उस पाप के निवारणार्थ यज्ञ द्वारा सुगन्ध फैलानी चाहिए।

5. यज्ञ से लाभ-यज्ञ के बहुत अधिक लाभ हैं जिनमें से कुछ विशेष का ही यहाँ पर उल्लेख किया गया है, जोकि निम्नलिखित है-

1. अग्नौ प्रास्ताहुति: सम्यगादित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं तत: प्रजा: विशुद्ध मनुस्मृति॥ 76 (52)

भावार्थ-अग्नि में अच्छी प्रकार डाली हुई घृत तथा सामग्री की आहुति सूर्य को प्राप्त होती है। सूर्य की किरणों से वातावरण में मिलकर अपना प्रभाव डालती है। फिर सूर्य से वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न पैदा होता है। उस अन्न से प्रजाओं का पालन पोषण होता है।

2. यज्ञशिष्टाशिन: सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्विषै:॥

भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

-श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 3, श्लोक 13

भावार्थ-यज्ञ करने के बाद यज्ञ से व अतिथिगणों को भोजन कराने के बाद बचे हुए भोजन को खाने वालों को सब पाप छोड़कर चले जाते हैं। किन्तु जो केवल अपने लिए ही भोजन बनाते हैं वे निरा पाप खाते हैं।

3. अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भव:।

यज्ञात् भवति पर्जन्यो यज्ञ: कर्मसमुद्भव:॥

-श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 3, श्लोक 14

भावार्थ-प्राणिमात्र अन्न से सत्ता प्राप्त करते हैं। अन्न की सत्ता बादलों से होती है। बादल यज्ञ से होते हैं और यज्ञ एक लक्ष्य को सामने रखकर किये जाने वाले कर्मों से उत्पन्न होता है।

4. यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।

नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्य: कुरुसत्तम॥

-श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 4, श्लोक 31

भावार्थ-यज्ञ करने वाले यज्ञ-शेष रूपी अमृत खाते हैं। इसलिए सनातन ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। हे अर्जुन ! यज्ञ न करने वाले को यह लोक प्राप्त नहीं होता तो फिर परलोक किस प्रकार प्राप्त होगा ? अर्थात् कदापि नहीं।

5. ये शुभ्रा घोर वर्णस: सुक्षत्रासो रिशादश:।

मरुद्भिरग्न आ गहि॥

-ऋ. मं. 1. सूक्त 19, मन्त्र 5

भावार्थ-जो यज्ञ के धूम से शोधे हुए पवन, वे अच्छे राज्य के कराने वाले होकर रोग आदि दोषों का नाश करते हैं। और जो अशुद्ध अर्थात् दुर्गन्ध आदि दोषों से भरे हुए हैं वे सुखों का नाश करते हैं। इससे मनुष्यों को चाहिए कि अग्नि में होम द्वारा वायु की शुद्धि से अनेक प्रकार के सुखों को सिद्ध करें।

6. कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे त्वा।

जुष्टां प्रोक्षामि बर्हिरसि सुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि॥

-यजु, अध्याय 2, मन्त्र।

भावार्थ-ईश्वर उपदेश करता है कि सब मनुष्यों को वेदी बनाकर और पात्र आदि होम की सामग्री लेकर उस हवि को अच्छी प्रकार शुद्ध करके तथा अग्नि में होम करके किया हुआ यज्ञ वर्षा के शुद्ध जल से सब औषधियों को पुष्ट करता है। उस यज्ञ के अनुष्ठान से सब प्राणियों को नित्य सुख देना मनुष्यों का परम धर्म है।

7. किसलिए यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए इस विषय का उपदेश निम्नलिखित मन्त्र में किया है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से सभा कार्यालय गुरूदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में 8 अप्रैल 2016 को आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर समस्त पंजाब से आर्य महानुभाव इस भव्य समारोह में पधारे हुए थे। सभी के पावन सहयोग से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य वेद प्रचार और वेद पर आधारित महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों का प्रचार और प्रसार करना है। आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द का मुख्य उद्देश्य लोगों को पाखण्डों, अन्धविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, मूर्तिपूजा के श्राप से मुक्त करना था। अपना आशय स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि मेरा किसी भी नवीन मत को चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है अर्थात् यूं कहें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का उद्देश्य संसार में सत्य पर आधारित वेद के सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित करना था। महाभारत युद्ध के पश्चात हम जिस रसातल की ओर जा रहे थे। अपने सत्य ग्रन्थ वेदों को भूलकर पुराणों और अनार्ष ग्रन्थों में पड़कर समाज में बहुत सी नई कुरीतियों ने जन्म लिया था। मूर्तिपूजा के कारण समाज की बहुत हानि हो रही थी। लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुख हो रहे थे। सामाजिक कुरीतियों के कारण समाज कई टुकडों में बंट चुका था। जातिवाद और छूआछूत के कारण लोगों में एक दूसरे के प्रति द्वेष और छल कपट की भावनाएं थी। जिसके परिणामस्वरूप हम पहले मुगलों के आधीन रहे और उसके पश्चात हमें अंग्रेजों की दासता सहनी पड़ी। ऐसे समय में एक ऐसी क्रान्ति की आवश्यकता थी जो राष्ट्र को जहां सामाजिक कुरीतियों से मुक्त कर सकें वहीं पर धर्म के नाम पर हो रहे व्यापार से लोगों को छुटकारा मिले। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिससे धर्म के नाम पर व्यापार करने वालों की जड़ें हिल गई और समाज में फैल रही कुरीतियों से भी लोगों को छुटकारा मिला। आर्य समाज ने एक ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिसे धधकती आग का नाम दिया गया। जिस आग में सभी सामाजिक कुरीतियां जलकर भस्म हो गई। इसके साथ ही लोगों में स्वतन्त्रता के प्रति भाव जागृत हुए। आर्य समाज ने अपने आरम्भिक काल से लेकर आज तक समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया है और आगे भी करता रहेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का आर्य समाज स्थापना दिवस मनाने के पीछे भी यही उद्देश्य था कि लोगों में आर्य समाज के प्रति जागरूकता बढ़े। देश में जिस प्रकार की घटनाएं हो रही है। भारत माता की जय पर निरर्थक विवाद ने जन्म लिया है, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में देश की बर्बादी के नारे लगाए गए, अफजल गुरू जैसे आतंकवादी की बरसी मनाई गई और उसी विश्वविद्यालय के परिसर में कुछ मूर्खों ने महर्षि मनु के प्रसिद्ध ग्रन्थ मनुस्मृति की प्रतियों को जलाया। ऐसी घटनाओं से हमारे देश की छवि को आघात पहुंचा है। आज समय की मांग है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक जागरूक होकर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य का जिम्मेदारी के साथ वहन करे। यह काम केवल आर्य समाज कर सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का हर संभव प्रयास है कि आर्य समाज के लक्ष्य और उद्देश्य के प्रति आम जनता को जागृत किया जाए। इसके लिए सभा में वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है। पंजाब प्रान्त के साथ-साथ अन्य प्रान्तों के लोग भी सभा कार्यालय में प्रचारार्थ साहित्य लेने के लिए आते हैं। इसके साथ ही सभा के द्वारा सभी संस्थाओं एवं गुरूकुलों को आर्थिक सहयोग दिया जाता है ताकि वेद प्रचार का कार्य चलता रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब निरन्तर आगे बढ़ रही है। 8 अप्रैल को जिस उत्साह और लग्न के साथ आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह मनाया गया उससे सभी को एक प्रेरणा मिली है। सभी कार्य सहयोग और उत्साह के साथ ही सम्पन्न होते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आप सबके सहयोग से आगे भी इसी प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करती रहेगी और वेद प्रचार के कार्यों को इसी प्रकार जारी रखेगी।

अंत में मैं सभी आर्य समाजों, एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया। इस कार्यक्रम की सफलता सभी की सफलता है। सभा आप सबके सहयोग से ही आगे बढ़ रही है। सभी आर्यजनों ने जिस उत्साह और उमंग के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया उसके लिए वे सभी धन्यवाद के पात्र है। आगे भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आपसे इसी प्रकार के सहयोग की कामना करती है। सभी आर्य समाजें एकजुट होकर वेद प्रचार के कार्य में लग जाएं। सभा के द्वारा आपका हर सम्भव सहयोग किया जाएगा। वेद प्रचार करना हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। इस लक्ष्य को लेकर सभी आर्य समाजें अपने-अपने क्षेत्र में वेद प्रचार का कार्य करें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं वैसाखी का पर्व आर्य समाज मंदिर जीरा में बड़ी ही धूमधाम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें सर्वप्रथम पं. श्री किशोर कुणाल जी ने वृहद्यज्ञ करवाया और आर्य समाज स्थापना दिवस व वैसाखी पर्व के महत्व के बारे में विस्तार से रोशनी डाली और अन्त में सभी यजमान महानुभावों को इस पर्व पर विशेष रूप से संकल्प करवाते हुए कहा कि पर्व हमें आपस में प्रेम और भाईचारे के साथ मिलजुल कर रहने का पाठ पढ़ाता है। इसलिए आज हम सभी संकल्प लेकर जाएं कि हम जहां भी रहें जैसे भी रहें प्रेम हमारा जीवन का अभिन्न अंग होगा। इस पवित्र पर्व की सम्पन्नता समाज के बड़े ही कर्मठ व लगनशील प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य जी ने नेतृत्व में हुआ। इस महान् पर्व को मनाने में लोगों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। अन्त में शांन्ति पाठ के साथ इस उत्सव को अंतिम रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए प्रसाद वितरण किया गया और सभा की कारवाई समाप्त की गई।

जलप्रसेचन का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

-ले० पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E, कैलाश नगर, फाजिल्का, (पंजाब)

शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु।। अथर्व. 2-10-2

जल के साथ अर्थात् जल से प्रसिक्त अग्नि तेरे लिए सुख और शान्ति दायक हो।

प्रस्तुत मन्त्र में जल और अग्नि के सम्पर्क से जलप्रसेचन का महत्त्व प्रदर्शित किया गया है।

जलप्रसेचन पर जहां वैदिक विद्वानों ने चिन्तन-मनन किया है, वहां पाश्चात्य विद्वान् भी इससे अछूते नहीं रहे हैं। वैदिक विद्वानों ने आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक विचार किया है परन्तु पाश्चात्य विद्वानों ने भौतिक दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी हैं।

डॉ० रघुवीर वेदालंकार ''वैदिक वाग् ज्योतिः'' जन. 2014 से जन. 2015 तक संयुक्तांक में ''पर्यावरण की समस्या तथा इसका वेदोक्त समाधान'' लेख में जलप्रसेचन का उद्देश्य बताते हुए लिखते हैं-

''कैम्बीयर तथा वाचेट'' (Cambier and Brochet) ने अनेक परीक्षणों से सिद्ध किया है कि इस फारमेल्डीहाइड (Formal-dihyde) गैस से घर के गंदे कीटाणु भी नष्ट हो जाते हैं। यह बात विशेष है कि इस गैस का प्रभाव तभी होता है जब कि पानी के वाष्पों की संगति इसे मिले। यज्ञ में इसी अभिप्राय से यज्ञकुण्ड के चारों ओर मेखलाओं (शुद्ध शब्द परिखा होना चाहिए) में पानी भरा जाता है।''

समीक्षा-भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने यह स्पष्ट नहीं किया कि जलप्रसेचन के समय जल की गात्रा कितनी होनी चाहिए ? क्योंकि संकेतित गैस बनने के लिए पानी की उचित मात्रा भी तो होनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने अंजलि से पानी डालने के लिए निर्देश किया है-''अञ्जलि में जल लेके चारों ओर छिड़कावे।''

चारों ओर अञ्जलि-अञ्जलि भर डाले गए पानी से क्या वह गैस बनेगी ? अथवा जिन विद्वानों ने लोटा भर पानी डालने के लिए कहा है, उनकी बात सही होगी ? यद्यपि लोटे वालों ने भी गैस बनने का परीक्षण नहीं किया तथापि हो सकता है कि उनकी बात सही हो जाए।

एक अन्य ध्यातव्य बात यह है कि जल प्रसेचन के पश्चात् आहुतियां डालते हुए अग्नि का प्रज्वलित ताप कितना होना चाहिए, जिस पर गैस बननी प्रारम्भ हो जायगी ? ऐसी शंका इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि जल तो हवनकुण्ड की ऊपरी मेखला से लगभग एक फुट नीचे होता है और प्रज्वलित अग्नि ऊपरी मेखला से ऊपर ही उठती है। अतः अग्नि और जल का सम्पूर्ण किस अवस्था में होगा ? यह चिन्तनीय है। क्योंकि अग्नि की उष्णता जल तक पहुंचनी कठिन है। यदि अग्नि और जल समानान्तर अवस्था में होते तो गैस बनने की सम्भावना अधिक थी।

यदि इस विषय पर वैदिक एवं वैज्ञानिक विद्वान् संयुक्त रूप से विस्तृत विवेचन एवं प्रयोग उपस्थित करते तो बहुत अच्छा होता और सकारात्मक परिणाम सबके सम्मुख आते।

इस दृष्टि से यदि अधोगः हवनकुण्ड़ का प्रयोग किया जाय और उसकी मेखला एक ही रखी जाय साथ ही परिखा को अपेक्षाकृत चौड़ा रखकर जलप्रसेचन अधिक मात्रा में किया जाय तो गैस बनने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाती है। क्योंकि हवनकुण्ड से उठती उच्च लपटें जल को अत्यधिक उष्णता प्रदान करेंगी जिससे वैज्ञानिकों की कथित/वर्णित गैस बनने की सम्भावना अधिकतम हो जायगी।

लोहे और तांबे से निर्मित हवनकुण्ड को परात में रखने पर चारों ओर डाला गया पानी गैस अधिक उत्पन्न करने में समर्थ होगा। क्योंकि धातु निर्मित हवन-कुण्ड शीघ्र गर्म होकर स्वयमेव चहुंदिशि जल को गर्म कर गैस में परिवर्तित करेगा।

ज्वलन्त प्रश्न

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, देवसंस्कृति विश्व-विद्यालय, पतञ्जलि विश्वविद्यालय हरिद्वार सदृश सर्वश्रेष्ठ यज्ञ समर्थक विश्व-विद्यालयों के होते हुए भी हम पाश्चात्य वैज्ञानिकों पर निर्भर हैं-यज्ञ की प्रामाणिकता के लिए ! इससे बड़ी विडम्बना भला और क्या हो सकती है ? चाहिए तो यह था कि ये विश्वविद्यालय ''वैज्ञानिक यज्ञीय अनुसन्धान केन्द्र एवं प्रयोगशाला'' की स्थापना करते। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। यज्ञीय प्रामाणिकता के लिए भी पाश्चात्य विद्वानों को ही उद्धृत करने लगे। जब तक उनका उल्लेख न किया जाय तब तक कोई लेख या पुस्तक प्रामाणिक नहीं मानी जाती। इस स्थिति में क्या मनु का यह कथन असत्य नहीं सिद्ध हो जाता ?

एतद् देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिवयां सर्वमानवाः।। -मनु० 2/20

इस आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों अर्थात् विद्वानों के सान्निध्य से पृथिवी के सभी मनुष्य अपने-अपने योग्य आचरण अर्थात् कर्त्तव्य, विद्या और चरित्रों की शिक्षा लें।

यदि पौर्वात्व वैदिक विद्वान् उनके कथन/सूत्रों को कसौटी पर परखते तो हो सकता है और भी तथ्य सामने आते। क्योंकि पाश्चात्य विद्वानों ने यज्ञ में प्रयुक्त पदार्थों को परखा और अपने निर्णय स्थापित किए। परन्तु मन्त्रोच्चारण का औचित्य एवं आध्यात्मिकता के साथ सामञ्जस्य बिठाने का प्रयत्न नहीं किया। जबकि वेद कहता है-

यो विद्यात् सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः।
सूत्रस्य सूत्रं यो विद्यात् स विद्यात् ब्राह्मणं महत।।

अथर्व. 10-18-37

जो व्यक्ति उस विस्तृत सूत्र को जान लेता है जिसमें यह सब लोक-लोकान्तर एवं उत्पन्न हुई जड़-चेतन वस्तुएं ओत-प्रोत हैं अर्थात् माला के मनके की भांति पिरोई हुई हैं। और जो पुरुष इस सूत्र के भी सूत्र को जान लेता है, वहीं मनुष्य उस महान् ब्रह्म को जान लेता है।

वस्तुतः इन सूत्रों के सूत्र को भी वैदिक विद्वान् ही जान सकता है। अतः वह बड़े आत्म विश्वास के साथ घोषणा करता है-

वेदाहं सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः।
सूत्रं सूत्रस्याहं वेदाथो यद् ब्राह्मणं महत्।।

अथर्व. 10-8-38

मैं उस विस्तृत सूत्र को जानता हूँ, जिसमें यह समस्त लोक-लोकान्तर और जड़-चेतन प्रजा ओत-प्रोत है। और मैं सूत्र के भी सूत्र को जानता हूं। जो वह महान् ब्रह्म है।

अतः वैदिक विद्वान् जलप्रसेचन सूत्र का भी अन्वेषण करने का प्रयत्न करें।

खेद है कि आज भी हम यज्ञीय प्रामाणिकता के लिए पाश्चात्यों पर निर्भर हैं। क्या हम इस विषय में आत्म-निर्भर नहीं हो सकते ? जलप्रसेचन की वैज्ञानिकता को पौर्वात्य विद्वानों ने तथ्यों/सूत्रों के आधार पर नहीं दर्शाया।

आशा है उपर्युक्त तीनों विश्व-विद्यालय संयुक्त रूप से प्रयत्न करेंगे। वैसे पतञ्जलि विश्व-विद्यालय स्वयं एकाकी ही ''यज्ञीय अनुसन्धान केन्द्र एवं प्रयोगशाला'' की स्थापना करने में पूर्णतः समर्थ है। पूज्य श्री स्वामी रामदेव जी इस विषय में अत्यन्त कुशल, उत्साही, प्रयत्नशील, सामर्थ्य सम्पन्न, पुरूषार्थी, कर्मठ व्यक्ति हैं। आचार्य बालकृष्ण सदृश समर्पित, लग्नशील सहयोगी के होते हुए श्री स्वामी जी निश्चित रूप से इस कार्य का शुभारम्भ कर सकते हैं। इस नवानुसन्धान से यज्ञ की प्रामाणिकता, महत्ता, श्रेष्ठता सिद्ध होने पर पुनः हम अपने प्राचीन गौरव का सप्रमाण गुणगान करने में पूर्णतः समर्थ होंगे। इसी आशा के साथ प्रतीक्षारत-

आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दां के चुनाव सम्पन्न

जालन्धर 24 अप्रैल (शास्त्री): आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दां का चुनाव हुआ। इस दौरान एडवो, शिव कुमार सोनिक को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया और उन्हें अपनी संबंधित कार्यकारिणी गठित करने का अधिकार दिया गया। नवनियुक्त अध्यक्ष श्री सोनिक ने सर्वप्रथम समूह टीम का आभार व्यक्त किया और कहा कि आपने जो मुझे जिम्मेदारी दी है, उसे मैं निःस्वार्थभाव से तन, मन व धन से निभाऊंगा। इस दौरान बलदेव राज चौहान को पैटर्न, एस.एम. आर्य को (सहयोगी पैटर्न), राजिन्द्र नागपाल (सचिव), राजदेव (संयुक्त सचिव), बलवीर धीमान (वित्त सचिव), जनक राज अरोड़ा (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), सुदर्शन शर्मा (सीनियर प्रोजैक्ट डायरैक्टर हवन-यज्ञ) व लोक सम्पर्क अधिकारी प्रिंट मीडिया, आलोक नागपाल (प्रोजैक्ट डायरैक्टर स्थायी प्रोजैक्ट्स), सतनाम अरोड़ा (उपाध्यक्ष), अमृत लाल चड्ढा (प्रोजैक्ट डायरैक्टर वार्षिक उत्सव), रविन्द्र मेहंदीरत्ता (प्रोजैक्ट डायरैक्टर फंड रेजिंग), राकेश सोनिक (प्रोजैक्टर डायरैक्टर बिल्डिंग एवं लोक सम्पर्क अधिकारी इलैक्ट्रॉनिक मीडिया), राकेश नागरा (संयुक्त प्रोजैक्ट डायरैक्टर फंड रेजिंग) तथा कार्यकारिणी सदस्यों में दविन्द्र निश्चल, पवन रत्तड़ा, तिलक राज, रमेश खुराना, गगनदीप शर्मा, ओम प्रकाश खुराना, रविन्द्र बागा, तिलक राज बागा, कृष्ण लाल सोनिक को शामिल किया गया। एडवाइजर टीम में मलूक चंद नागपाल, देवराज महाजन, पुरुषोत्तम लाल गुप्ता तथा दर्शन लाल को नियुक्त किया गया।

पुरी में रहने वाले 'पुरुष' दो हैं

-ले० इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियाँ, सिटी सेन्टर के निकट, यमुनानगर (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' के प्रथम समुल्लास में लिखते हैं कि ईश्वर के अनेक नाम हैं। ये नाम गुणवाचक, सम्बन्ध वाचक, कर्मवाचक हैं। इनके अतिरिक्त एक नाम मुख्य व निज (= ओ३म्) भी है। इसी समुल्लास में एक नाम 'पुरुष' भी है। इस नाम के आधार पर एक पौराणिक विद्वान् पं० गिरिधर शर्मा ने एक शास्त्रार्थ में तत्कालीन आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान महात्मा मुंशी राम (= स्वामी श्रद्धानन्द जी) से एक शास्त्रार्थ में प्रश्न किया था-स्वामी दयानन्द ने ईश्वर को पुरुष घोषित किया है। यह प्रमाण वेद में नहीं है तो स्वामी जी ने क्यों ऐसा घोषित किया ? इस प्रश्न के उत्तर में महात्मा मुंशीराम जी ने कहा कि वेद में ईश्वर को पुरुष कहा गया है-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्य वर्ण तमसः परस्तात्,
तमेव विदिलातितं मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

-यजुर्वेद, ३१-१८

अर्थात् मैं ऐसे महान्तम् पुरुष को जानता हूँ जो आदित्य-सूर्य के समान तेजस्वी, अन्धकार से परे है। वह ब्रह्माण्ड-रूपी नगरी में निवास करने वाले प्रभु पुरुष हैं, सर्वव्यापक हैं, सर्वाधिक महान् हैं, विनम्र हैं अथवा 'वह पूजायाम्' पूजा के योग्य हैं। उस ज्योतिर्मय प्रभु को जानकर ही मनुष्य मृत्यु को लांघ जाता है तथा मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। अन्य कोई उपाय या मार्ग नहीं है।

वेद के कुछ अन्य मन्त्रों में भी ईश्वर को पुरुष कहा गया। उनमें से कुछ उस प्रकार है-

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्ष सहस्त्रपात्। स भूमिंविश्वतो सपृत्वात्यातिष्ठदशाङ्गुलम्।

-ऋ० १०-६०-१

भावार्थः वह पुरुष विशेष प्रभु 'अनन्त सिरों, आंखों व पाँव' वाले हैं। सारे ब्रह्माण्ड को आवृत करके इसको लांघकर रह रहे हैं।

पुरुष एवेदं सर्व-यद् भूत यच्च भव्यम्। उतामृत-स्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।

-ऋ० १०-१००२

भावार्थः ब्रह्माण्ड नगर में निवास व शयन करने वाले प्रभु सब प्राणियों पर शासन करने वाले हैं। उनके जो कर्मानुसार जन्म को ग्रहण कर चुके हैं तथा जो समीप भविष्य में ही जन्म ग्रहण करेंगे। इन प्राणियों में भी वे प्रभु ईश हैं।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिविः

-ऋ० १०-१०-३

भावार्थः समस्त ब्रह्माण्ड पुरुष विशेष प्रभु की महिमा का प्रतिपादन कर रहा है। वे प्रभु इस ब्रह्माण्ड से बहुत बड़े हैं। यह ब्रह्माण्ड तो प्रभु के एक देश में ही है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत्पुनः॥

-यजुर्वेद ३२/४

भावार्थ-यह पूर्वोक्त परमेश्वर कार्य जगत् से पृथक तीन अंश से प्रकाशित हुआ।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः

-यजुर्वेद ३२/१

भावार्थ-हम अपने हृदयों को पवित्र बना वहाँ प्रभु की ज्योति को जगाएं।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः

-यजुर्वेद ३२/३

भावार्थः सारा ब्रह्माण्ड प्रभु के एक देश में है।

ततो विराडजायत विराजोऽ-अधि पुरुष।

-य. ३१/५

भावार्थः यह संसार प्रभु द्वारा प्रारम्भ में एक विराट् पिण्ड के रूप में उत्पन्न किया जाता है।

पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।

-ऋ० १०-१०-२

भावार्थः यह जो कुछ भूत, वर्तमान और भविष्य है, यह सब उपलब्ध जगत् सब जगत् के आधार सनातन भगवान में ही हैं।

वेदों में अन्य प्रमाण भी उपलब्ध हैं परन्तु विस्तारभय से वेद-प्रमाण और न देकर दर्शनों के कुछ प्रमाण उद्धृत हैं-

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेष ईश्वरः

-योग दर्शनम् १/२४

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेश-इन पाँच क्लेशों, शुभा-शुभ कर्मों, कर्मफल तथा..... वासनाओं से असम्बद्ध पुरुष विशेष ईश्वर कहलाता है।

आत्मा को भी यत्र-यत्र पुरुष अर्थ में प्रयोग किया गया है:

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्॥

-वेद

अर्थः हे जीव ! तुम उर्ध्वगति-वाला हो। तेरा नाम 'पुरुष' है तेरी सार्थकता पुरुषार्थ करने में है।

अथ त्रिविधदुःत्वात्यन्त-निवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः।

-साख्य दर्शन १/१

अर्थः आध्यात्मिक, आधि-भौतिक तथा आधिदैविक. इन तीन प्रकार के दुखों से अतिशय निवृत्ति परम पुरुषार्थ (= पुरुष का प्रयोजन) है। इसका प्रतिपादन करने वाले शास्त्र का प्रारम्भ करते हैं।

न सर्वोच्छित्तिर-पुरुषार्थ-त्वादिदोषात्।

-सांख्य दर्शन ५/१४

अर्थः आत्मा और अनात्मा सबका उच्छेद (= नाश) भी मोक्ष नहीं हैं, अपुरुषार्थता होने आदि दोष से।

पुरुषबहुत्वं व्यवस्थातः।

साख्य दर्शन ६/४५

अर्थः पुरुष (= आत्माएँ) बहुत हैं, व्यवस्था के कारण।

न पौरुषेयत्वं तत्कर्तुः पुरुषस्या-भावात्। - सांख्य दर्शन ५/४६

अर्थ : शब्दाराशि वेद भी पौरुषेय नहीं है (= किसी पुरुष अर्थात् आत्मा द्वारा रचे नहीं गए) उसकी रचना करने वाले पुरुष के न होने से।

नापौरुषेयत्वान्नित्यत्वमङ्कुरादिवत॥ -सां० दर्शन ५/४८

अर्थः किसी पुरुष (= आत्मा) द्वारा न लिखे होने से वेदों का नित्य होना नहीं कहा जा सकता, अङ्कुरादि के समान।

यस्मिन्नदृष्टेऽपिकृतबुद्धिरूपपायते तत् पौरुषेयम्। -सं० द. ५/५

अर्थः जिस वस्तु में कर्त्ता के द्वारा अदृष्ट होने पर भी यह रची गई है, ऐसी बुद्धि होती है, वह वस्तु पौरुषेय (= आत्मा द्वारा रची गई) कही जाती है।

सत्व पुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यम्। -योग दर्शनम् ३/५४

अर्थः तत्व और पुरुष (= आत्मा, जीव) की शुद्धि समान होने पर कैवल्य (= मोक्ष) हो जाता है।

ब्राह्मणः पुरं वेदेति पुरुष उच्यते।

अथर्व की दृष्टि से ''पुरं वेत्तीति पुरुषः'' ऐसा पुरुष निर्वचन है। श्रुति की दृष्टि से यह निर्वचन जीवन (= आत्मा) का ही प्रतीत होता है क्योंकि ब्रह्मपुर का ज्ञान वही करेगा। जहाँ ब्रह्म ओत प्रोत है, वह सब ही ब्रह्म का पुर हुआ तथा वह है सर्वजगत्, उसे सम्पूर्णतः प्रभु ही जानते हैं, इस दृष्टि से वे भी पुरुष कहे जा सकते हैं।

आत्मा को 'पुरुष' क्यों कहते हैं? वह पूः अर्थात् शरीर में रहता है। अतः पुरिषादः कहाता हुआ पुरुष कहा जाने लगा अथवा उसमें सोता है। अतः पुरिशय होता हुआ 'पुरुष' हो गया-पुरुषः पुरिषादः पुरिशयः।

पूरयति अन्तः अन्न पुरुषम अभिप्रेत्य अर्थात् अन्दर से सम्पूर्ण जगत् को भरपूर कर रहा है, अन्तर्यामी होने से सर्वत्र व्याप्त है, ऐसा विग्रह परमेश्वर को लक्ष्य करके ही किया जाता है।

इससे सिद्ध होता है कि 'पुरुष' शब्द का अर्थ प्रसंग व परिस्थितिवशात् आत्मा तथा परमात्मा-इन दोनों में से कोई भी अर्थ ग्रहण किया जाना चाहिए।

आत्मा रूपी 'पुरुष' और परमात्मा रूपी 'पुरुष' में अन्तर भी समझना अपेक्षित है। इस विषय में निवेदन यह है परमात्मा विशेष महान्तम् पुरुष है। यह यजुर्वेद के मन्त्र ३१/१८ में तथा योगदर्शन के सूत्र १/२४ में इस लेख में उद्धृत किया जा चुका है जबकि आत्मा सामान्य है। परमात्मा व आत्मा काल की दृष्टि से अनन्त हैं परन्तु व्यापकता की दृष्टि से परमात्मा सर्वत्र व्यापक है परन्तु आत्मा की व्यापकता सीमित है। आत्मा सत् व चित् है तो परमात्मा सत्, चित् तथा आनन्द स्वरूप है। आत्मा सर्वशक्तिमान नहीं है अर्थात् उसे करणीय कार्य करने के लिए दूसरे व्यक्तियों तथा परमात्मा से सहायता लेनी पड़ती है जबकि परमात्मा को अपने कार्य करने के लिए किसी की भी सहायता की अवश्यकता नहीं। परमात्मा अनुपम है परन्तु आत्मा अनुपम नहीं है। परमात्मा सृष्टिकर्त्ता है परन्तु आत्मा ऐसा नहीं है।

ईश्वर अभय है तो जीव अधिकतर भयशील ही रहता है। परमात्मा सर्वान्तर्यामी है परन्तु आत्मा अन्तर्यामी हो नहीं सकता। परमात्मा सर्वज्ञ है परन्तु आत्मा अल्पज्ञ है। आत्मा शरीर को प्राप्त करता है परन्तु परमात्मा ने कभी शरीर धारण नहीं किया तथा न ही ऐसा करेगा। परमात्मा अकाल है परन्तु आत्मा ऐसा नहीं हो सकता। कुछ अन्य भी परस्पर भेद हैं।

पृष्ठ 2 का शेष-देव यज्ञ : उसके लाभ....

आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा

दीक्षायै तपसेऽग्नये स्वाहा सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा।

आपो देवीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवीऽउरोऽ अन्तरिक्ष।

बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा॥

-यजुर्वेद अध्याय 4, मन्त्र 7

भावार्थ-यज्ञ के अनुष्ठान के बिना उत्साह, बुद्धि, सत्यावाणी, धर्माचरण की रीति, तप, धर्म का अनुष्ठान और विद्या की पुष्टि का सम्भव नहीं होता और इनके बिना कोई भी मनुष्य परमेश्वर की आराधना करने में समर्थ नहीं हो सकता। इससे सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान करके सब प्रकार से आनन्द प्राप्त करना चाहिए।

8. यज्ञ एक कोश है जो निम्न मन्त्र में निर्दिष्ट है:

एतं सधस्थाः परि वो ददामि यं शेधिमावहाज्जात वेदाः।

अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति तं स्म जानीत परमे व्योमन्॥

-अथर्ववेद काण्ड 6, सूक्त 123, मन्त्र 1

भावार्थ-(1) प्रभु मनुष्यों से कहते हैं कि हे यज्ञवेदि पर बैठने वाले यज्ञशील लोगो ! इस यज्ञ को मैं तुम्हें देता हूँ। उस यज्ञ को तुम्हारे लिए देता हूँ जिस यज्ञरूप कोश को यह यज्ञाग्नि तुम्हारे लिए प्राप्त कराता है। यज्ञ एक कोश है, क्योंकि इससे पर्जन्यों (बादलों) की उत्पत्ति होगी। बादलों से वर्षा होकर विविध अन्नों का उत्पादन होगा। (2) यह यज्ञशील पुरुष क्रमशः अधिकाधिक कल्याण को प्राप्त होगा। हे यज्ञशील पुरुषो ! तुम उस मुझ परमात्मा को इस परम आकाश में सर्वत्र व्याप्त जानो।

9. यज्ञ के द्वारा अज्ञात रोगों से, क्षयरोग से तथा वात रोग से मुक्ति जो निम्न मन्त्र में उपदिष्ट है-

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्षत्।

ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मु मुक्तमेनम्।

अथर्ववेद काण्ड 3, सूक्त 11, मन्त्र 1

भावार्थ-प्रभु कहते हैं कि तुझे अग्निहोत्र के द्वारा सुखपूर्वक जीवन जीने के लिए अज्ञात रोगों से और राजरोग (क्षयरोग) से तथा वातरोग से छुड़ाता हूँ।

10. अग्निहोत्र रोग मुक्ति के साथ दीर्घ जीवन प्रदान करता है जो अगले मन्त्र में प्रस्तुत है:

सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम्।

इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम्॥

-अथर्ववेद काण्ड 3, सूक्त 11, मन्त्र 3

भावार्थ-अग्निहोत्र में आहुत घृत-सामग्री पदार्थों के द्वारा नेत्र ज्योति बढ़ती है तथा कान आदि इन्द्रियों की शक्ति ठीक बनी रहती है और मानव सौ वर्ष के दीर्घ जीवन को प्राप्त करते हैं।

11. यज्ञादि उत्तम कर्मों से सुखमय जीवन-

नाके राजन्प्रति तिष्ठ तत्रैतत्प्रति तिष्ठतु।

विद्धि पूर्तस्य नो राजन्त्स देव सुमना भव॥

-अथर्ववेद काण्ड 6, सूक्त 123, मन्त्र 5

भावार्थ-यज्ञादि उत्तम कर्मों से सुखमय जीवन जीने वाले बनकर हम इन यज्ञादि कर्मों में और अधिक प्रवृत्त हों। प्रभु से उपदिष्ट इष्ट व पूर्त कर्मों को करने वाले बनें। अर्थात् यज्ञ यागादि इष्ट हैं। उपकारार्थ कुआँ, तालाब, नल, ट्यूबवैल अनाथालय एवं आश्रम आदि बनवाना पूर्त है। सदा प्रसन्न व प्रशस्त मन वाले बनें।

12. गुग्गल की हवि से अग्निहोत्र करने से राजयक्ष्मा आदि रोगों से मुक्ति-

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते।

यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते॥

-अथर्ववेद काण्ड 19, सूक्त 38, मन्त्र।

भावार्थ-गुग्गल की हवि से अग्निहोत्र करने से राजयक्ष्मा रोग भाग जाता है तथा अग्निहोत्र से गुग्गल की हवि सम्पूर्ण घर को उस गन्ध से व्याप्त कर देती है जो कि रोगों को आक्रान्त करके होताओं को नीरोग व शान्तचित्त बना देती है। यह तो है ही रोगापहारी (रोगों का नाश करने वाली)।

पृथिवी के टिके रहने सम्बन्धी सभी भ्रान्तियों का निराकरण, वेदों में

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य 180 M.G Road (ढोतल्ला), कोलकता-7

महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में पृथिवी के टिके रहने सम्बन्धी, जो भ्रान्तियाँ लोगों में फैली हुई है, उनका समुचित समाधान वेद-मन्त्रों के आधार पर किया हुआ है, वह इसी भान्ति है:

१. प्रश्न-पृथिवी को धारण कौन करता है ? कोई कहता है-'शेष' अर्थात् सहस्त्र फन वाले सर्प के शिर पर पृथिवी है। दूसरा कहता है कि-बैल के सींग पर। तीसरा कहता है कि किसी पर नहीं। चौथा कहता है कि वायु के आधार। पाँचवां कहता है-सूर्य के आकर्षण से खेंची हुई अपने ठिकाने पर स्थित। छठा कहता है कि पृथिवी भारी होने से नीचे-नीचे आकाश में चली जाती है इत्यादि में किस बात को सत्य माने ?

उत्तर-जो "शेष सर्प और बैल के सींग पर धरी हुई पृथिवी स्थित है" कहता है, उसको पूछना चाहिये कि सर्प और बैल के माँ-बाप के जन्म के समय किस पर थी। तथा सर्प्प और बैल आदि किस पर हैं ? तो "तेरी चुप मेरी भी चुप" और लडने लग जायेंगे। शेष का सच्चा अभिप्राय यह है। कि जो "बाकी" रहता है, उसको "शेष" नाम के फन पर टिकी हुई है कह देते हैं।

सत्येनोत्रमिता भूमिः॥ यह ऋग्वेद के मन्त्र का भाग है। अर्थः (सत्य) अर्थात् जो त्रैकाल्या बाध्य, जिसका कभी नाश नहीं होता, उस परमेश्वर ने भूमि आदि सब लोकों को धारण किया है।

(नोटः पृथिवी के टिकने का आधार परमेश्वर है, इस अभिप्राय से तो यह अर्थ ठीक है। परन्तु इसका एक दूसरा अभिप्राय भी लग सकता है कि सत्य व्यवहार पर ही यह संसार चलता है। यदि सत्य व्यवहार न रहे तो संसार का कोई कार्य भी नहीं चले। ये मेरे स्वयं के विचार हैं भूल भी हो सकती है)

उक्षा दाधार पृथिवीमुत द्याम्॥ यह भी ऋग्वेद का वचन है।

इसी (उक्षा) शब्द को देखकर किसी ने बैल का ग्रहण किया होगा, क्योंकि उक्षा बैल का भी नाम है। परन्तु उस मूढ़ को यह विदित न हुआ कि इतने बड़े भूगोल के धारण करने का सामर्थ्य बैल में कहाँ से आवेगा। इसलिए "उक्षा" वर्षा द्वारा भूगोल के सेचन करने से "सूर्य" का नाम है। उसने अपने आकर्षण से पृथिवी धारण की है। परन्तु सूर्यादि का धारण करने वाला परमेश्वर के बिना दूसरा कोई भी नहीं है।

2. प्रश्न-इतने-इतने बड़े भूगोलों को परमेश्वर कैसे धारण कर सकता होगा ?

उत्तर-जैसे अनन्त आकाश के सामने बड़े-बड़े भूगोल कुछ भी अर्थात् समुद्र के आगे जल के छोटे कण के तुल्य भी नहीं, वैसे अनन्त परमेश्वर के सामने असंख्यात लोक एक परमाणु के तुल्य भी नहीं कह सकते। वह बाहर-भीतर सर्वत्र व्यापक है। अर्थात्:

"विभूः प्रजासु"-यह यजुर्वेद का वचन है।

वह परमात्मा सब प्रजाओं में व्यापक होकर सबको धारण कर रहा है। जो वह ईसाई के कथनानुसार कि ईश्वर चौथे आसमान पर रहता है, मुसलमानों के कथनानुसार कि ईश्वर सातवें आसमान पर रहता है तथा पुराणियों के कथनानुसार कि ईश्वर क्षीर-सागर या कैलाश पर्वत पर रहता है, तो वह विभू न होता तो इस सब सृष्टि को धारण कभी न कर सकता। क्योंकि बिना प्राप्ति के किसी को कोई धारण नहीं कर सकता। कोई कहे कि यह लोक परस्पर आकर्षण से धारण होंगे, पुनः परमेश्वर के धारण करने की क्या अपेक्षा है ? उनको यह उत्तर देना चाहिए कि यह सृष्टि अनन्त है, या सान्त ? जो अनन्त कहें तो आकार वाली वस्तु अनन्त कभी नहीं हो सकती और सान्त कहें तो उनके पर-भाग "सीमा" अर्थात् जिसके परे कोई भी दूसरा लोक

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 6 का शेष-पृथिवी के टिके.....

नहीं है, वहां किसके आकर्षण से धारण होगा ? जैसे समष्टि और व्यष्टि अर्थात् जब सब समुदाय का नाम वन रखते हैं तो समष्टि कहता है और एक-एक वृक्षादि की भिन्न-भिन्न गणना करें तो 'व्यष्टि' कहाता है, वैसे सब भूगोलों को समष्टि गिन कर जगत् कहें तो सब जगत् का धारण और आकर्षण का कर्त्ता बिना परमेश्वर के दूसरा कोई भी नहीं। इसलिए जो इस जगत् को रचता है, वही-

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम्॥

यह यजुर्वेद का वचन है।

पृथिव्यादि प्रकाश सहित लोक-लोकान्तर और पदार्थ तथा सूर्यादि प्रकाश सहित लोक और पदार्थ का रचन-धारण वही परमात्मा करता है।

इस लेख से हमें परम पिता परमात्मा की व्यापकता का ज्ञान होता है और यह ज्ञान हमें वैदिक धर्म को छोड़कर अन्य कोई भी तथा कथित धर्म नहीं दे सकते। इसलिए हम सब का यह पावन कर्त्तव्य बन जाता है कि हम सब वैदिक धर्मानुसार चल कर अपने जीवन को सफल बनावें और अपने अन्तिम लक्ष्य ''मोक्ष'' को प्राप्त करें।

स्वामी सूर्यदेव जी की वेदप्रचारार्थ विदेश यात्राएं

पिछले वर्ष स्वामी सूर्यदेव जी की आर्य समाज सिंगापुर एवं सिंगापुर के आसपास स्थित आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं में वेद प्रचारार्थ यात्रा हुई थी। इसके साथ स्वामी सूर्यदेव जी इंडोनेशिया और मलेशिया में भी प्रचारार्थ गये थे। मोरिशस की अनेक आर्य समाजों में भी स्वामी सूर्यदेव जी के व्याख्यान एवं सफल कार्यक्रम हुये जिसके बाद आर्य समाज मारीशस ने स्वामी सूर्यदेव जी की भूरि भूरि प्रशंसा की थी। वहां से लौटने पर स्वामी जी को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सम्मानित किया था और उनकी सफल धर्म प्रचार यात्राओं को देखते हुये स्वामी जी का धन्यवाद किया गया था। अब पुन: आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में स्वामी सूर्यदेव जी बांग्ला देश की यात्रा पर जा रहे हैं। स्वामी जी सबसे पहले बांग्लादेश के शहर ढाका में जाएंगे यहां बांग्ला देश के आर्य जन स्वामी जी का ढ़ाका एयरपोर्ट पर स्वागत करेंगे। ढाका में वेद प्रचार के बाद स्वामी जी बांग्ला देश के एक अन्य बड़े शहर जास्सौर एवं उसके साथ लगते जिलों में स्वामी जी का वेद प्रचार का कार्यक्रम है। इसके पश्चात स्वामी सूर्यदेव जी बांग्ला देश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुभाष आचार्य स्वतंत्रता सेनानी जो स्वामी जी के अत्यन्त प्रिय है वहां उनके साथ रहेंगे और आर्य समाज का प्रचार प्रसार करंगे। बांग्ला देश में प्रचार करने के बाद स्वामी जी 11 मई को म्यांमार अर्थात बर्मा की राजधानी रंगून पहुंचेंगे। रंगून स्थित आर्य समाज एवं हिन्दू संस्थाओं में स्वामी जी का वेदों पर प्रवचन होगा। उसके बाद स्वामी जी बर्मा के एक अन्य बड़े शहर मांडले में जाएंगे यहां स्वामी जी का कार्यक्रम रखा गया है। जिसकी व्यवस्था म्यांमार में आर्य समाज के प्रधान श्री अशोक छत्रपाल जी और आर्य समाज के महामंत्री श्री विजय शंकर वर्मा की होगी। म्यांमार में इन दोनों महानुभावों की देखरेख में आर्य समाज एवं हिन्दू संस्थाओं में स्वामी जी के प्रवचन होंगे।

इसके पश्चात स्वामी जी का अगला कार्यक्रम बैंकांक अर्थात थाइलैंड में होगा। थाइलैंड में स्वामी सूर्यदेव जी आर्य समाजों में प्रवचन करेंगे और उनके कुछ परिवारों में भी कार्यक्रम रखे गये हैं। थाइलैंड में वयोवृद्ध आर्य समाजी श्री राम पलटा जी पाण्डे जोकि आर्य समाज के प्रधान भी हैं, उनकी देख-रेख में स्वामी जी के कार्यक्रम स्थानीय आर्य समाजों में होंगे। इसके पश्चात् स्वामी जी आसपास के शहरों कम्बोजिया, लाओस, वियतनाम आदि में अपना कार्यक्रम रखेंगे। इन देशों में आर्य समाजें तो नहीं हैं लेकिन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के आग्रह पर स्वामी जी वहां जा रहे हैं ताकि कोई पुराना आर्य समाजी मिल जाएं जिसके कारण इन देशों में आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार किया जा सके। इन देशों की धर्म यात्रा के बाद स्वामी जी का कार्यक्रम भूटान में होगा। भूटान में भी आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार मध्यम हो चुका है जो स्वामी जी की यात्रा के पश्चात और सक्रिय होने की संभावना है। इस तरह स्वामी जी लगभग एक मास की धर्म प्रचार यात्रा पर जा रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उनकी इस धर्मप्रचार यात्रा पर अपनी शुभकामनाएं दी हैं।

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज दीनानगर की ओर से आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 8 अप्रैल 2016 को विशाल गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसकी पूर्णाहुति 15-04-2016 राम नवमी को हुई। 8 अप्रैल को स्वामी सदानन्द जी महाराज अध्यक्ष दयानन्दमठ दीनानगर के द्वारा एवं प्रिंसीपल गन्धर्व महाजन जी द्वारा ध्वाजारोहण किया गया। तत्पश्चात् स्वामी जी ने अपने उदबोधन में कहा कि आर्यों की संस्कृति बहुत महान है। मर्यादा पुरूषोतम राम एवं योगीराज श्री कृष्ण इसी आर्य संस्कृति के संरक्षक थे।

इसी आर्य संस्कृति की पुनर्स्थापना हेतु आज के दिन महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी जो आज भी भारतीय संस्कृति की रक्षा कर रहा है। हमें भी महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऋण से उऋण होने के लिए वेद प्रचार में लग जाना चाहिए। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश से पधारे पंडित हरिश्चन्द्र जी के मधुर भजन हुए। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान रघुनाथ शास्त्री, सचिव रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन, प्रिं. गन्धर्वराज, राधेश्याम् महाजन, योगेन्द्रपाल गुप्ता, रणजीत शर्मा, अरूण विज, सरदारी लाल, सतपाल शर्मा, चौधरी रघपाल सिंह, श्री मति प्रभा महाजन, कैलाश शर्मा, श्री धीरेन्द्र पुरुष आदि मौजूद थे। **-रमेश महाजन**

आर्य समाज स्थापना दिवस, रामनवमी पर्व एवं वैसाखी पर्व मनाया गया

आर्य समाज मालेरकोटला द्वारा प्रधान श्री भूपेन्द्र कौशल एडवोकेट के नेतृत्व में तथा मन्त्री सुनीता आर्य के संचालन में दिल्ली गेट स्थित आर्य परिसर में भव्य समारोह का आयोजन किया गया।

मुख्य यजमान के रूप में श्री सजीव सूद (के. पी. एमं इन्डट्रीज़) परिवार ने आहुतियाँ दी। ज्योति प्रज्जवलन उद्योगपति श्री कृष्ण मोहन गुप्ता ने किया। ध्वजारोहण की रस्म श्री टी. सी. सोनी (प्रिंसीपल डी. ए. वी. सी. सै. स्कूल) ने पूर्ण की।

विशेष अतिथि श्री इज़हार आलम सेवानिवृत्त डी. जी. पी. को समाज द्वारा स्कूल तथा कम्यूनिटी हाल के निर्माण हेतु सहयोग के लिए माँग पत्र दिया गया। श्री आलम ने अपने सम्बोधन में कहा कि वे यू. पी. के जिस गाँव में पैदा हुए वहाँ मुस्लिम और आर्य समाजी लोग रहते थे। उन्होंने कभी नहीं देखा कि किसी आर्य समाजी ने किसी प्रकार की साम्प्रदायिक नफ़रत पैदा करने की कभी कोशिश की हो बल्कि उन्होंने मानवता को जोड़ने का ही काम किया।

मुख्य वक्ता डा० प्रमोद जी योगार्थी, प्राचार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार, ने आर्य समाज की स्थापना के इतिहास सहित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज के संरक्षक श्री रविन्द्र नाथ ठाकुर, प्रो० डी. डी. भट्टी, संरक्षक श्री शशि कांत उप्पल जी कोषाध्यक्ष श्री संदीप सूद, सह कोषाध्यक्ष श्री महिन्द्र दीप, प्रचार मन्त्री श्री सुमन्त तलवानी, सह प्रचार मन्त्री श्री देवेन्द्र कौशल, श्री सतपाल गुप्ता, श्रीमती कृष्णा आर्य, सुश्री लीला सूद, डा० सुजाता, श्री यादविन्द्र कौशल, श्री वीरेन्द्र महाशय, श्री सोम प्रकाश आर्य, श्री राजीव मोहिल धूरी इस (संगरूर) अवसर पर उपस्थित थे। मन्त्रोच्चारण श्री दयानिधि शास्त्री एवं श्री कृष्ण यादव हिसार द्वारा किया गया। **-मन्त्री-सुनीता मैगौन आर्य**

आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव 9 मई से 15 मई 2016 तक बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री के प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के मधुर भजन होंगे। आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित इस कार्यक्रम में आमन्त्रित हैं।

-वेद आर्य मन्त्री आर्य समाज आर्य नगर

वेदवाणी

युद्ध द्वारा परमात्मा का बन्धुत्व

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि।
युधेदापित्वमिच्छसे॥

-ऋ० ८।२१।१३; अथर्व० २०।११४।१

विनय-हे परमेश्वर ! तुम्हारे लिए न कोई शत्रु है और न कोई बन्धु है। तुम जिस उच्च स्वरूप में रहते हो वहाँ शत्रुता और बन्धुता का कुछ अर्थ ही नहीं। तुम्हारे लिए कोई नायक वा नियन्ता भी कैसे हो सकता है ? तुम्हीं एकमात्र सब जगत् के नियन्ता हो, नेता हो। तुम जन्म से, स्वभाव से ही ऐसे हो। 'जनुषा' का यह तात्पर्य नहीं कि तुम्हारा कभी जन्म होता है। तुम तो सनातन हो, सनातन रूप से ही शत्रुरहित और बन्धुरहित हो, पर निर्लिप्त होते हुए भी तुम हमारे बन्धुत्व (आपित्व) को चाहते हो और इस बन्धुत्व को तुम युद्ध द्वारा चाहते हो, अहा ! कैसा सुन्दर आयोजन है ? तुम चाहते हो कि संसार के सब प्राणी सांसारिक युद्ध करके ही एक दिन तुम्हारे बन्धु बन जाएँ, तुम्हारे बन्धुत्व का साक्षात्कार कर लें। सचमुच बिना लड़ाई के मिली सुलह, बिना सङ्घर्ष के मिली प्रीति, बिना संग्राम के मिली मैत्री नीरस है, फीकी है, अवास्तविक है, उसका कुछ मूल्य नहीं है। बन्धुता तो अबन्धुता की, लड़ाई की सापेक्षता में ही अनुभूत की जा सकती है। इसीलिए हे मेरे जगदीश्वर ? मुझे अब समझ में आता है कि तुमने कल्याणस्वरूप होते हुए भी इस अपने जगत् में दुःख, दर्द, दारिद्र्य, रोग, क्लेश, आपत्ति, उलझन आदि को क्यों उत्पन्न होने दिया है। अब समझ में आता है कि तुमने इन कठिनाइयों को खड़ा करके प्राणियों के जीवन को निरन्तर युद्धमय, सङ्घर्षमय क्यों बनाया है। सचमुच, यह सब-कुछ तुमने इसीलिए किया है कि हम इन बाधाओं को जीतकर, इन कठिनाईयों, उलझनों को पार करके तेरे बन्धुत्व के रसास्वादन के योग्य बन जाएँ। तू तो अब भी हमारा बन्धु है। हममें से जो तेरे द्रोही कहे जाते हैं, जो नास्तिक हैं उनका भी तू सदैव एक-समान बन्धु है (और वास्तव में किसी का भी बन्धु या शत्रु नहीं है) तो भी तेरी उस बन्धुता का अनुभव-तुझे बन्धु-रूप से पा लेने का परमानन्द-हमें तभी मिल सकता है जब हम संसार के इस परम विकट युद्ध को विजय करके तेरे पास आ पहुँचें। तू चाहता है कि आज जो तुझसे बहुत दूर है, तेरा कट्टर द्वेषी है, वह युद्ध करके एक दिन तेरा उतना ही नज़दीकी और उतना ही कट्टर बन्धु बन जाए, अतः अब मैं तेरे बन्धुत्व पाने के समर में ही कमर कसे खड़ा हुआ अपने को पाता हूँ ; जितनी बार मरूँगा इसी समर की युद्धभूमि में मरूँगा और अन्त में तेरे बन्धुत्व को पाकर ही दम लूँगा। यही तेरी इच्छा है, यही तेरी मुझसे प्रेममय इच्छा है।

श्री केशव दास आर्य नहीं रहे

आर्य समाज जगाधरी वर्कशाप के संस्थापक एवं मंत्री श्री केशव दास आर्य का निधन 16 अप्रैल 2016 को हो गया। वे 87 वर्ष की आयु भोग कर इस संसार से विदा हुये। वे बहुत शालीन, सक्रिय व वैदिक सिद्धान्तों के पोषक व प्रचारक थे। उनका अंत्येष्टि संस्कार 70 किलो घृत वा 130 किलो हवन सामग्री आदि से वेद मंत्रों के उच्चारण से किया गया। शोक विमोचन सभा में हिमाचल के राज्यपाल श्री देवव्रत जी व वैदिक मिशनरी पं. इन्द्रजित देव ने श्री केशव दास आर्य के गुणों, कार्यों व मृत्यु विषयक विचारों द्वारा प्रकाश डाला व मृतक को श्रद्धांजलि दी। उनकी अस्थियां गुरुकुल यमुनानगर में स्थापित की गई व राख इसी गुरुकुल के खेतों में बिखेर दी गई।

-प्रधान आर्य समाज

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।